International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 09-01-2026, Accepted: 08-02-2026, Published: 23-02-2026
Volume 8, Issue 1, 2026, Page No. 19-21

नाटक– भाषा सीखने और विकास के बीच समानता

Dr. Syed Muen
Assistant Professor, Department of Social Sciences and Languages, Kristu Jayanti Deemed to be University, Bangalore, Karnataka, India

सारांश
नाटक केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि भाषा सीखने और मानसिक विकास का एक सशक्त शैक्षणिक उपकरण है। नाट्य क्रिया के माध्यम से शिक्षार्थी भाषा को अनुभव, संवाद, और अभिव्यक्ति के स्तर पर आत्मसात करता है।यह प्रक्रिया रटने पर आधारित शिक्षण से आगे बढ़कर जीवंत भाषा–अभ्यास को प्रोत्साहित करती है।
नाटक के प्रयोग से न केवल बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने की क्षमता में सुधार होता है,बल्कि संप्रेषण, आत्मविश्वास, सृजनशीलता और सामाजिक सहयोग जैसे गुणों का भी विकास होता है। इस शोध का उद्देश्य यह सिद्ध करना है कि नाट्य शिक्षण प्रक्रिया में भाषा अधिगम और व्यक्तित्व विकास एक–दूसरे के पूरक हैं।अध्ययन से स्पष्ट होता है कि नाटक के माध्यम से भाषा शिक्षण अधिक सक्रिय, संवादात्मक और समावेशी बनता है, जो विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए अत्यंत प्रभावी है।

मूल शब्दः नाटक, भाषा अधिगम, सृजनात्मक अभिव्यक्ति, संप्रेषण कौशल, शिक्षण विधि, व्यक्तित्व विकास, नाट्य शिक्षण, अनुभवात्मक अधिगम

परिचय
यह बात सच है कि एक सवाल और उसके बाद एक सवाल एक नए रास्ते की ओर ले जाते हैं, क्योंकि नाटक और भाषा सीखने के मामलों में स्टूडेंट जितने ज़्यादा सवाल पूछते हैं, उतने ही नए रास्ते सामने आते हैं। इसलिए, इस लेख का मकसद सवालों के सामने नाटक और भाषा सीखने और उसके विकास में समानताएं ढूंढना है। अगर किसी अवधारणा को समाज में सीधे तौर पर बताना है, तो यह स्वाभाविक है कि वह मुख्य रूप से भाषा का इस्तेमाल करे, जिसमें बोलकर, शारीरिक, भावनात्मक और विस्मयादिबोधक रूपों को प्राथमिकता दी जाती है।
क्योंकि छात्र विद्यालय में मूलपाठ में साहित्यिक शैलियों के ज़रिए भाषा को औपचारिक रूप से लागू करते हैं, इसलिए भाषा शिक्षकों की पढ़ाई को प्राथमिकता दी जाती है, और इसलिए भाषा शिक्षकों को पढ़ाने में खास कौशल हासिल करनी चाहिए। ऐसे माहौल में जहां भाषा कौशल समाज में अनौपचारिक रूप से सीखी जा रही हैं, और जहां उन्हें औपचारिक अनुशासन के तहत अलग–अलग सामाजिक सेटिंग्स में व्यक्त करने और समुदाय की प्रगति के आईने के रूप में काम करने का इरादा है, मौजूदा भाषा सीखने को बहुत गंभीरता और जिम्मेदारी से लिया जाना चाहिए।
भाषा का अवधारणा सभी कला में छिपा होता है, इस्तेमाल होता है और नए रूपों से प्रभावित होता है। यह भारतीयों के लिए खुशकिस्मती की बात है कि नाट्य शास्त्र, जो सिखाने वाली किताब है, कला के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश है। अगर हम नाट्य शास्त्र के तत्व में व्यावहारिक प्रशिक्षण के ज़रिए स्टेज पर भाषा को बहुत असरदार तरीके से दिखाने के उदाहरण देखें, तो इसमें कोई शक नहीं कि अगर भाषा सीखने वालों को स्टेज ट्रेनिंग भी मिले तो भाषा का ट्रांसमिशन बहुत अच्छा होगा। इसलिए, नीचे नाटक और भाषा सीखने और विकासमेंट में समानताओं और एक–दूसरे पर लागू होने वाले पहलुओं की एक अध्ययन है।

अध्ययन का मकसद
इस लेख के मुख्य मकसद इस तरह हैं।
- नाटक और भाषा सीखने और विकासमेंट में एक जैसी बातों की पहचान करना।
- भाषा की पढ़ाई के सीखने के प्रक्रिया में नाटक के इस्तेमाल की तुलना करके अध्ययन करना।

अध्ययन का तरीका
यह लेख मुख्य रूप से एक रंगमंच संसाधन व्यक्ति, श्री. श्रीनिवास का साक्षात्कार लेने और भाषा, कन्नड़ भाषा स्किल्स, नाटक, शोध आलेख, रंगमंच एक्सपेरिमेंट से जुड़े निबंध, काम, नाटक पर आलोचकल लेख और इंटरनेट सोर्स जैसे सेकेंडरी सोर्स से जानकारी इकट्ठा करने और उन पर चर्चा, समीक्षा, विश्लेषण, अनुप्रयोग और तुलना वाले तरीकों से चर्चा करने पर आधारित है।

नाटक और भाषा सीखना और विकास
नाटक एक खेल है, खेल में भाषा कई एक्सरसाइज़ के ज़रिए साफ़, फ़्लूएंट, सटीक और संपर्क होती है, भाषा सीखना एक खेल के रूप में होता है लेकिन लगातार विकास के साथ, कई एबिलिटीज़ हासिल की जा सकती हैं, इसलिए नाटक और भाषा सीखने और विकास के पहलुओं पर नीचे दिए गए डायग्राम के ज़रिए छह हिस्सों में चर्चा की गई है।

भाग एक

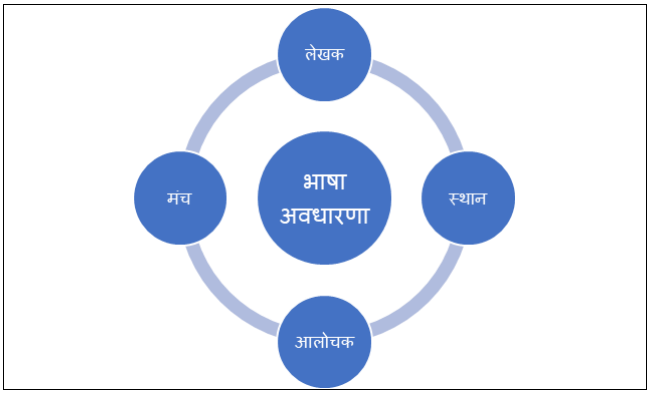

जैसा कि ऊपर बताया गया है, कोई भी भाषा का अवधारणा समाज में वैलिडिटी का एक अंक बन जाता है, इस प्रक्रिया के

भाषा सीखने के क्षेत्र में, लेखक द्वारा बनाए गए भाषा के अवधारणा के मूलपाठ, जिसमें कलात्मक, भावनात्मक और बौद्धिक तत्वशामिल हैं, आलोचक के मापाक में तौले जाते हैं, और कम्युनिटी लाइफ़ के अलग–अलग जगहों पर संपर्क किए जाते हैं। इसी तरह, रंगमंच में भी कला और विज्ञान के तत्व शामिल होते हैं। समाज में भाषा, रंगमंच क्षेत्र में निदेशक, जिसे नाटककार कहते हैं, के विचारों की एक सीरीज़ के ज़रिए अप्रत्यक्ष अभिव्यक्त होती है। भाषाई अवधारणा के बाएँ और दाएँ दोनों अंक में, हम ऊपर दिए गए पाँच अंक के संगम की बराबर पार्टनरशिप या को–पार्टिसिपेशन देखते हैं, जो डायमंड–शेप्ड फ़ॉर्म बनाता है।

मेहरबीन के कम्युनिकेशन साइंस के अनुसार, भाषा कम्युनिकेशन का फ़ॉर्मूला नीचे दिए गए चित्र में दिखाया गया है।

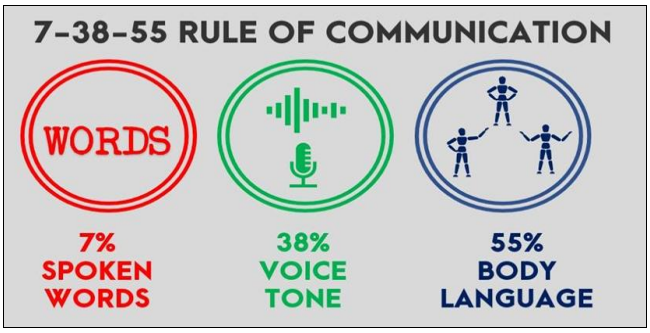

अगर इसे बिना किसी मूवमेंट, हाव–भाव, भावना, मुद्रा के शब्दों से व्यक्त किया जाए, तो यह सिर्फ़ 7% है, अगर इसे आवाज़ के टोन से व्यक्त किया जाए, तो यह 38% है, और बॉडी लैंग्वेज से 55% है। यानी, 100% असरदार कम्युनिकेशन के लिए, एक सीखने वाले को तीन चीज़ों की ज़रूरत होती है। भाषा शिक्षा के सीखने के क्षेत्र में पढ़ने और लिखने पर ज़्यादा ध्यान देने का नतीजा, जो अलग–अलग जीवन स्थितियों में ज़रूरी है, भाषा सीखने की मौजूदा स्थिति को दिखाता है।

अगर हम देखें कि अभिनेता और अभिनेत्री भारतीय नाट्यशास्त्र में पाए जाने वाले नृत्य के ग्यारह तत्वों पर आधारित नाटक की कला में शरीर, वाणी, भोजन और सात्विकता के प्रायोगिक अभ्यास के ज़रिए 100% कुशलता से मंच पर असरदार तरीके से संवाद कर पाते हैं, तो हम देख सकते हैं कि मौजूदा शैक्षिक माहौल बेहतर हुआ है। अगर हम रंगमंच और शैक्षिक के माहौल की एक–दूसरे से तुलना करें, तो हम देख सकते हैं कि शैक्षणिक माहौल को और आगे सोचना चाहिए।

अनुसंधान से पता चलता है कि हॉवर्ड गार्डनर ने नृत्य तत्व को शामिल करके और उनके असर में बहु बुद्धि बनाए। अगर इन्हें स्कूली शिक्षा में असरदार तरीके से और पूरी तरह से लागू किया गया, तो उम्मीद की जा सकती है कि मौजूदा छात्र के संचार परिणाम में असरदार सकारात्मक फर्क दिखेंगे।

प्रस्तावना में बताया गया था कि आठवीं कक्षा की पहली भाषा कन्नड़ पाठ्यपुस्तक समावेशी रचनात्मक, और स्पाइरल तरीकों के मूलरूप आदर्श पर बनाई गई है। तो, क्या भाषा शिक्षकों इन तरीकों को पूरी तरह से लागू करना जानते हैं? क्या उनके नमूना बनाए गए हैं? सवाल उठते हैं। जवाब है, ये तरीके व्याख्या से जुड़े हैं और नाटक में इनका असरदार इस्तेमाल भी आजकल हो रहा है। शक है कि शिक्षा विभाग ने यह क्यों नहीं देखा कि नाटक में इनका असरदार तरीके से इस्तेमाल हो रहा है। कम से कम, छात्र सीखना, शिक्षक शिक्षण विधियाँ और प्रशिक्षण में नाटक के व्यावहारिक तत्व को सिखाने के तरीकों पर ध्यान देना चाहिए। भाषा के अवधारणाएँ को होश में संचार करना आजकल एक बहुत ज़रूरी मुद्दा है।

भाग दो

हालांकि भाषा के अवधारणा में मौखिक, शारीरिक, भावनात्मक, बौद्धिक, दार्शनिक, तार्किक, कलात्मक, वैज्ञानिक एलिमेंट होते हैं, लेकिन लिंग्विस्टिक एक्सप्रेशन का प्रक्रिया दो जगहों पर होता हैरू रंगमंच और रोज़मर्रा की ज़िंदगी। रंगमंच में लिंग्विस्टिक एक्सप्रेशन, प्लेराइटर की मैन्युस्क्रिप्ट में अलग–अलग आर्टिस्टिक एलिमेंट के साथ–साथ फिजिकल और वर्बल एलिमेंट की सही ट्रेनिंग के बाद स्टेज पर दिखता है। समाज में, हम स्कूल में भावनात्मक तत्वको अपनाते हुए अलग–अलग लेखकों के लिखे मूलपाठ सीखते हैं और ज़रूरत पड़ने पर उन्हें फिजिकल, वर्बल और भावनात्मक तत्वके साथ एक्सप्रेस करते हैं। इसी बैकग्राउंड में, भागवन में जारी डायमंड इमेज का विस्तार इस तरह है।

भावनात्मक क्षेत्र

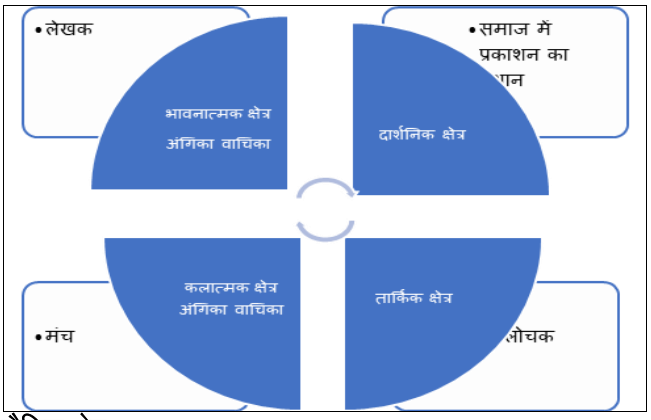

बौद्धिक क्षेत्र

जैसा कि ऊपर दिए गए डायग्राम में देखा जा सकता है, समाज और रंगमंच में, भाषा के अवधारणा का ऊपरी हिस्सा इमोशनल दायरे को दिखाता है, जबकि भाषा के अवधारणा का निचला हिस्सा इंटेलेक्चुअल दायरे को दिखाता है। दोनों ही क्षेत्रों में लेखक और आलोचक दोनों ज़रूरी हैं। भाषा के अवधारणा के बाईं ओर, अभिनेता, फिजिकल, वर्बल, फूड और स्पिरिचुअल पहलुओं के साथ–साथ आर्टिस्टिक और लॉजिकल पहलुओं को जानते हुए, स्टेज पर भाषा की रिहर्सल और एक्सप्रेस करते हैं और ऑडियंस को प्रभावित करते हैं। फिर भी, दाईं ओर, भाषा सीखने वाले स्टेज पर इमोशनल और फिलॉसॉफिकल पहलुओं को एक्सप्रेस करते हैं। यहाँ भी, रंगमंच में और रोज़मर्रा की ज़िंदगी में, इमोशनल और इंटेलेक्चुअल पहलू अलग–अलग ऑर्गन एक्टिविटीज़ के ज़रिए भाषा कम्युनिकेशन को प्रभावित करते हैं। भाषा के अवधारणा का विस्तार जारी है। कम्युनिकेशन में संपर्कर्स के अलग–अलग मूलपाठ अगले सेक्शन में बताए गए हैं।

भाग तीन

ऊपर दी गई तस्वीर में, लेखक का काम आर्टिस्टिक और इमोशनल दायरे के असर में बनाया गया है, और यही काम घटना की जगह पर साइंटिफिक दायरे की मर्ज़ी के हिसाब से आलोचक के करेक्शन के साथ एक मूलपाठ का रूप लेता है, और फैसिलिटेटर के लिए एक लेसन प्लान मूलपाठ, स्टूडेंट के अभ्यास और एक्सप्रेशन के लिए एक मूलपाठ बन जाता है, और ज़िंदगी के इमोशनल और फिलॉसॉफिकल तत्व के साथ संपर्क करता है।

नाटक के फील्ड में भी, प्लेराइट का बनाया नाटक आर्टिस्टिक और इंटेलेक्चुअल तत्व को शामिल करता है, और निदेशक के लॉजिक में एक डायरेक्शन मूलपाठ, अभिनेता के लिए एक

एक्सप्रेशन मूलपाठ बन जाता है, और स्टेज पर संपर्क किया जाता है। कुल मिलाकर, नाटक और समाज के फील्ड में, लिंग्विस्टिक अवधारणा का मूलपाठ छह डायमेंशन में एक मूलपाठ में बदल जाता है, जिनमें से दोनों में यह पहचाना जा सकता है कि फिजिकल, वर्बल, फूड और सात्विक तत्व एक अहम रोल निभाते हैं। यह याद रखना चाहिए कि यह प्रक्रिया एक स्पाइरल शेप में होता है। इसका कंटिन्यूएशन इस तरह है।

भाग चार

1. लेखक या नाटककार, 2. व्यक्ति या स्टूडेंट, 3. अभिनेता, 4. समाज का भावनात्मक पाठ, 5. दर्शकों का कलात्मक पाठ, 6. दर्शक, 7. दर्शकों का बौद्धिक पाठ, 8. समाज का बौद्धिक पाठ, 9. समाज, 10. आलोचक, 11. सुविधाकर्ता या शिक्षक, 12. निदेशक,13. वैज्ञानिक क्षेत्र, 14. कलात्मक क्षेत्र, 15. सैद्धांतिक धर्म, 16. दार्शनिक क्षेत्र

ऊपर दिए गए आरेख में, कलात्मक, प्राकृतिक धर्म, दार्शनिक और वैज्ञानिक क्षेत्र भाषा के अवधारणा में आपस में जुड़े हुए हैं। ये अंदरूनी इच्छाएं समाज और समाज में दर्शकों तक संपर्क करती हैं। एक तरफ, नाटककार, आलोचक, निर्देशक और अभिनेता उन मूलपाठ पर अंशकालिक रखते हैं जिन्हें दर्शकों ने अपने मूलपाठ में भौतिक, मौखिक, खाद्य और सात्विक तत्वों को सटीक अभ्यास करके बनाया है। यहां, भाषा की अवधारणाओं को विस्तार से समझाया जाता है और सूक्ष्म अंतरों को परत दर परत उजागर किया जाता है तथा दृश्य और श्रवण माध्यमों से प्रदर्शित किया जाता है, जो भाषा के विकास में 50/50 प्रभावी है।

यह सच है कि भाषा विद्यालयों में पाठ्येतर सीखने का एक उपकरण है, यहाँ भी लेखक, आलोचक, शिक्षक, छात्र के लिए सामाजिक परिदृश्य में सम्मिलित सभी उद्देश्यों के साथ भाषा की अवधारणाओं का संचार करना स्वभाव है, लेकिन चूंकि इसका मूल्यांकन करने के लिए कोई दर्शक नहीं है, इसलिए छात्र रोजमर्रा की जिंदगी में भाषा कौशल के ऐसे सूक्ष्म और सूक्ष्म विचारों को विस्तार से प्रदर्शित करने में बढ़ता है और भाषा का उपयोग केवल संचार के स्तर पर करता है।

समाज और दर्शक कलात्मक, भावनात्मक और बौद्धिक ग्रंथों के माध्यम से संचार करके भाषा सीखने और विकास के साक्षी हैं। इसलिए, मेहरबीन के अनुसार, यदि भाषा संचार, सीखना और विकास स्कूली भाषा शिक्षा में 100% होना है, तो रंगमंच के तीन पाठ्यक्रमों को अपनाने के अलावा, रंगमंच को भाषा शिक्षा के तीन पाठ्यक्रमों को भी शामिल करना चाहिए। दोनों का पारस्परिक आदान–प्रदान आवश्यक है, इसलिए, वर्तमान में रंगमंच और शिक्षा क्षेत्र में ऊपर चित्र में दिखाए गए अनुसार ग्रंथों का निर्माण करना आवश्यक है।

भाग पाँच

रंगमंच में कम्युनिकेशन का रास्ता इस तरह है। जो पहले आया, वह बाहर जाने पर दूसरा हो जाता है, इसे स्टैक–इन मेथड कहते हैं। जैसा कि पाँचवें भाग में देखा गया है, समाज के अंदर इमोशन, कला और विज्ञान के कई तत्व होते हैं, और रंगमंच में इन्हें संपर्क करने का तरीका यह है कि जो पहले लिया गया था, उसे दूसरे एलिमेंट के तौर पर दिया जाता है। समाज में भाषा के अवधारणा के भावनात्मक तत्वको लेकर और उन्हें बौद्धिक तत्व के साथ मिलाकर, नाटककार या लेखक निदेशक को मूलपाठ में भावनात्मक तत्वको समझने देता है, अभिनेता मूलपाठ को बौद्धिक समझता है और भावनात्मक तत्व की अभ्यास के साथ भावनात्मक तत्वके ज़रिए दर्शकों से संपर्क करता है। इस तरह, समाज में संचार प्रक्रिया होता है। संपर्क क्योंकि नाटक ऊपर दिए गए सभी पाँच भागमें भाषा सीखने को विकास करता है, इसलिए आगे के छह भागभाषा की पढ़ाई में नाटक के इस्तेमाल के शुरुआती चरणों के तौर पर दस एक्टिविटी के साथ सीखने और एक्सपेरिमेंट करने की ज़रूरत पर ज़ोर देते हैं। इसलिए, दस एक्टिविटी नीचे बताई गई हैं।

भाग छह

1. स्पर्श 2. आत्म–परिचय 3. सुनो–से–पढ़ो से कहोरू कहो आर लिकोरू जो लिखा है उसे कहो 4. पढ़ना 5. स्थिर जीवन 6. कार्रवाई के चरण 7. संवाद का मसौदा 8. कहानी 9. पाठ और बोली 10. भावनात्मक विस्फोट और बौद्धिक नियंत्रण

निष्कर्ष

कुल मिलाकर, जैसा कि ऊपर दिए गए सभी सेक्शन में देखा गया है, रंगमंच को भी एजुकेशन की ज़रूरत होती है, इसी तरह, रंगमंच कंटेंट का एप्लीकेशन और लर्निंग एजुकेशन के लिए ज़रूरी है। इसके अलावा, लैंग्वेज विकासमेंट और लर्निंग के नज़रिए से लैंग्वेज टीचिंग मेथड्स में बदलाव करना बेहतर है, एक ऐसा करिकुलम डिज़ाइन करें जो रंगमंच कॉन्सेप्ट्स और स्किल्स के ज़रिए आगे बढ़े, ऐसे लेसन प्लान करें जो नए कॉन्सेप्ट्स और स्किल्स इंट्रोड्यूस करें जो पिछले नॉलेज को रिव्यू और क्रिएट करें, लर्नर्स की लर्निंग और प्रोग्रेस को एसेस करें, और अलग–अलग मेथड्स से उनकी अंडरस्टैंडिंग और स्किल्स को इवैल्यूएट करें। टीचर्स, रंगमंच आर्टिस्ट के तौर पर, एक एंगेजिंग लैंग्वेज लर्निंग एक्सपीरियंस बना सकते हैं जो स्टूडेंट्स की लर्निंग और विकासमेंट को कॉम्प्लिमेंट करे, और सेल्फ–लर्निंग एक्सपीरियंस को इंस्पायर करे।

संदर्भ सुची

1. मेहराबियन ए. – नॉनवर्बल कम्युनिकेशन, एलाइन पब्लिशिंग कंपनी शिकागो, 1929
2. प्रो. सा. क्र. रामचंद्र राव – भरतमुनि का डांस और नटराज का आइडिया, सुरमा प्रकाशन बैंगलोर – 2014
3. नंबररू डॉ. के. वी. नारायण – भाषा, कन्नड़ बनाम वी. हम्पी – 2019
4. एम. एस. नरसिम्हामूर्ति – इंडियन नाटक हेरिटेज, प्रसारंगा बैंगलोर बनाम वी. दृ 2004
5. के. वी. अक्षरा – रंगमंच एक्सपेरिमेंट, अक्षरा पब्लिकेशन्स, हेग्गोडु दृ 2012
6. रंगताजना ना. श्रीनिवास के साथ डिस्कशन की जानकारी।